

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित बहुविषयक शिक्षण—अधिगम के प्रति उच्च शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के अनुभव एवं दृष्टिकोण का अध्ययन

डॉ० शहादत हुसैन (शोध निर्देशक), शिक्षा संकाय, सनराइस यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

सुमन (शोध छात्रा), शिक्षा संकाय, सनराइस यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

पृष्ठभूमि

भारत में सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित उच्च शिक्षा प्रणाली है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में तीसरे स्थान पर हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली पर ब्रिटिश नियंत्रण भारत सरकार अधिनियम 1935 तक जारी रहा, जिसने प्रांतीय राजनेताओं को अधिक हस्तांतरित की और शिक्षा का भारतीयकरण शुरू किया। 1948 में भारत सरकार ने उच्च शिक्षा के विकास और सुधार की निगरानी के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना की। अंग्रेजों के जाने के बावजूद भारतीय उच्च शिक्षा ने 1980 के दशक तक भाषाओं और मानविकी को महत्व देना जारी रखा। पिछले 30 वर्षों में, भारत में उच्च शिक्षा में तीव्र और प्रभावशाली वृद्धि हुई है किन्तु गुणवत्ता के अनुपात में नहीं। नतीजतन, शीर्ष संस्थानों में प्रवेश अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और उच्च प्रवेश परीक्षा स्कोर और बेहतर निजी कोचिंग संस्थानों के लिए एक प्रतियोगिता में तब्दील हो जाता है। अतः उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु शिक्षा के सम्प्रत्यय में परिवर्तन तथा शिक्षा के अनुशासन को बहु आयामी रूप में प्रदर्शित करने की जरूरत है। हालांकि बहुअनुसंधान शिक्षण कोई नवीनतम सम्प्रत्यय नहीं है, किन्तु इसे सम्पूर्ण रूप से समस्त संस्थानों में प्रयोग नहीं किया जाता है। जिस कारण से उच्च शिक्षा के मात्रात्मक सुधार के साथ-साथ गुणात्मक सुधार के परिणाम आशाजनक नहीं सिद्ध हो पाते हैं।

ऐसे गुणवत्तापूर्ण परिणामों की प्राप्ति के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन लाना काफी ज्यादा महत्वपूर्ण है और जिसके तहत वर्ष 2020 में नई शिक्षा नीति को जारी किया गया। नई राष्ट्रीय नीति 2020 से भारत में शिक्षा में गहरा बदलाव आने की उम्मीद है। 29 जुलाई 2020 को भारत के केन्द्रीय मंत्रीमंडल द्वारा अनुमोदित नीति, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई नीति 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की जगह लेती है। एनईपी की उच्च शिक्षा नीति में स्नातक कार्यक्रम में कई निकास विकल्पों के साथ 4 वर्षीय बहु-विषयक स्नातक की डिग्री का प्रस्ताव है। इनमें पेशेवर और व्यवसायिक क्षेत्र शामिल होंगे और इन्हें लागू किया जायेगा।

बहु-विषयक शिक्षण के संबंध में शिक्षा नीति 2020 में सुझाए गए प्रावधान निम्न हैं—एनईपी 2020 में 2030 तक प्रत्येक जिले में या उसके निकट एक बड़े बहु-विषयक उच्च शिक्षा संस्थान की परिकल्पना की गई है। जिसके अन्तर्गत साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मेडिसिन में अध्ययन के साथ-साथ लिबरल आर्ट्स, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर जोर देने के साथ एक उदार, बहु-विषयक और अंतर अनुशासनात्मक शिक्षा परिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की परिकल्पना की गई है। (मानवसंसाधन विकास मंत्रालय, 2020)।

बहु-विषयक शिक्षण की आवश्यकता

वास्तव में कई रिक्तियाँ भूमिका के लिए आवश्यक विषय ज्ञान को निर्दिष्ट नहीं करती है, यह वह कौशल है जिसे अपने अध्ययन में विकसित किया गया है। इसलिए एक से अधिक विषयों का अध्ययन करने से विद्यार्थी को महत्वपूर्ण हस्तांतरणीय कौशल विकसित करने में मदद मिलती है, जो जीवन के सभी चरणों में लगातार विकसित हो रहे हैं।

महत्वपूर्ण सोच

महत्वपूर्ण सोच कौशल का उपयोग और विकास किया जाता है, क्योंकि छात्र अन्य दृष्टिकोणों पर विचार करने के लिए अनुशासनात्मक सीमाओं को देखते हैं, और विषय क्षेत्रों में अवधारणाओं की तुलना और तुलना करना शुरू करते हैं।

आत्म प्रबंधन

किसी विषय का अध्ययन करना है और क्यों चुनना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, और छात्रों को अपनी प्राथमिकताओं की पहचान करने और अपने अध्ययन विकल्पों को प्रबंधित करने के बारे में ध्यान से सोचने की आवश्यकता है।

बहु-विषयक शिक्षण : सक्रिय शिक्षण के लिए एक दृष्टिकोण

आईबीई (शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो) पाठ्यक्रम एकीकरण के लिए समकालीन दृष्टिकोण के तीन प्रमुख प्रकार निर्दिष्ट करता है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु बहु-विषयक शिक्षण के साथ-साथ कुछ ऐसे शिक्षण (अनुशासन) का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है जोकि बहु-विषयक शिक्षण को संपूर्ण परिभाषित करते हैं, जैसे कि अंतः विषय अनुशासन, ट्रांसडिसिप्लिनरी लिबरल अनुशासन। छात्रों की समझ में सुधार करने और सीखने की प्रक्रिया को अधिक उत्पादक और मनोरंजक बनाने के लिए उन्हें संबंधित पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों के बीच संबंध का अनुभव करने की आवश्यकता है। अतः इन सभी पाठ्यक्रमों को उदाहरणों से समझने का प्रयास करते हैं।

बहु-विषयक पाठ्यक्रम

एक विषय का एक से अधिक विषयों के दृष्टिकोणों से अध्ययन कर रहा है और एक अलग अनुशासनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके एक समस्या को हल कर रहा है। (क्लासेन, 2018)

उदाहरण—एक गाड़ी से उत्सर्जन को कम करने के लिए ईंधन रसायन विज्ञान को विकसित करने या कार इंजन के प्रदर्शन में सुधार करने के तरीके का अध्ययन करके प्राप्त किया जा सकता है।

बहु-विषयक शिक्षण और शिक्षक

बहु-विषयक शिक्षण के लिए शिक्षकों में कुछ गुणों का होना आवश्यक है— गoyal (2017) शिक्षकों और विचारों को एक विभाग से दूसरे विभाग में अस्थायी रूप से स्थानान्तरित करने में बहु-विषयक निर्माण में काफी मदद मिलती है। अधिकांशतः शिक्षक/शिक्षिका शायद ही कभी अपने विभाग या कॉलेज के हॉल से बाहर निकलते हैं। अपने क्षेत्र में उन्नति के लिए ज्ञान का प्रवाह होना आवश्यक है।

यू0जी0सी0 (2017) संकाय सदस्य किसी भी विश्वविद्यालय में बहु-विषयक अनुसंधान और शिक्षण की आधारशिला होते हैं। जिसके तहत संकाय की कमी और प्रदर्शन और मूल्यांकन प्रणाली के डिजाइन पर टास्क फोर्स ने सिस्टम में 30,00,000 के अधिक की सूचना दी और आने वाले दशक के दौरान, हर साल 1,00,000 शिक्षकों की संख्या में वृद्धि का अनुमान लगाया।

शोध की आवश्यकता

छात्रों को बहु-विषयक अभ्यास में पर्याप्त स्तर की विशेषता हासिल करने में काफी समय लग सकता है। इसके अलावा, छात्रों को दो या दो से अधिक विषयों को संश्लेषित करने में सक्षम होने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है। आगे कुछ शोध के अनुसार शिक्षक के अनुभवों एवं दृष्टिकोण का मूल्यांकन किया गया है।

लिसा (2004) का मत है कि बहुत कम प्रमाण है कि ऐसे पाठ्यक्रम विशेष रूप से प्रभावशाली है या वे छात्र सीखने को बढ़ावा देने में अनुशासनात्मक पाठ्यक्रमों से बेहतर है। यह समझने के लिए कि अंतः विषय पाठ्यक्रम विशिष्ट सीखने के परिणामों को कैसे और क्यों बढ़ावा दे सकते हैं, लेखक दो स्नातक अंतः विषय पाठ्यक्रमों के विश्लेषण में संज्ञानात्मक और सीखने के सिद्धान्तों को लागू करते हैं।

यह शोध यह शिक्षकों के अनुभवों को साझा करते हुए यह दावा करती है कि विद्यार्थियों में विशेष मूल्यांकन करने की क्षमता, सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता और अनुशासन, सृजनात्मक एवं मूल चिंतन एवं मानवता जैसी क्षमताओं में इजाफा करती है।

इवानित्सकाया (2002) के अनुसार अंतः विषय विचारों के बार-बार संपर्क के साथ, शिक्षार्थियों के अधिक उन्नत ज्ञानमीमांसा संबंधी विश्वास विकसित होते हैं, महत्वपूर्ण सोच क्षमता और मेटाकोग्निटिव कौशल में वृद्धि होती है और विभिन्न विषयों के प्राप्त दृष्टिकोणों के बीच संबंधों की समझ होती है।

मिश्रा (2009) मानते हैं कि अंतः विषय पाठ्यक्रम के लिए स्नातक अनुसंधान साथियों को उजागर करने से अंतः विषय कक्षा और प्रयोगशाला गतिविधियों में भागीदारी और सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि हुई। उत्पाद, जैसे छात्र अनुसंधान परियोजनाओं की एकीकृत और अंतः विषय गुणवत्ता, उन अंडरग्रेजुएट्स की तुलना में कोई अन्तर नहीं दिखाती है। जो अंतः विषय पाठ्यक्रम से अवगत नहीं थे।

अतः इसके निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि प्रभावी वैज्ञानिक सहयोग के लिए आवश्यक ट्रांसडिसिप्लिनरी अवधारणाओं, विधियों और कौशल में आयोजित कार्यक्रम (बहु-विषयक शिक्षण) प्रभावपूर्ण रहा।

फारो (2021) के अनुसार अनुशासनात्मक प्रतिक्रियाओं को एक साथ करने के लिए छात्रों को छोड़ने के बजाय, आठ शिक्षण शिक्षाविदों ने छात्रों को विभिन्न प्रकार के ज्ञान को उजागर करने में कार्य में सहयोग किया जोकि अनुशासनात्मक भागों के योग से अधिक था। नेटवर्क के सदस्य एक दूसरे की कक्षाओं में पढ़ाने में सक्षम थे, और कई इकाईयों में सामग्री और छात्र गतिविधियों को साझा करते थे जिसमें व्यवसाय, प्राणीशास्त्र, समुद्री विज्ञान, भूगोल और शिक्षा शामिल थे।

समस्या कथन

“राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित बहुविषयक शिक्षण-अधिगम के प्रति उच्च शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के अनुभव व दृष्टिकोण का अध्ययन।”

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

बहु-विषयक शिक्षण अधिगम : अधिगम अद्वितीय इस संदर्भ में बहु-विषयक शिक्षण से आशय शैक्षिक दृष्टिकोण से है जो छात्रों को विभिन्न विषयों या पाठ्यक्रम को सीखने और तलाशने की अनुमति देता है। शिक्षा किसी विशेष अनुशासन तक सीमित नहीं रहती है।

पोपर (1963) “हम किसी विषय के छात्र नहीं हैं, बल्कि समस्याओं के छात्र हैं, और समस्याएँ किसी भी विषय या विषय की सीमाओं से बाहर जा सकती हैं।”

शिक्षक : उच्च शिक्षा के सभी स्टीगस से संबंधित एवं समस्त तरह के उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक।

अनुभव : अनुभव से आशय शिक्षकों द्वारा शिक्षण उस व्यवसाय में कार्यरत समय के साथ होने वाले अनुभवों से है। आशयतः उस व्यवसाय में कार्य करते हुए अनुभवों को आंकलन करना एवं अधिगम में बहुविषयक शिक्षण सम्बन्धी प्रयोग व क्रियाओं से है।

दृष्टिकोण

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में दृष्टिकोण से आशय : एनईपी 2020 में प्रस्तावित बहु-विषयक शिक्षण के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया, व्यवहार और तत्परता का विश्लेषण एवं शिक्षकों के अभिव्यक्ति को समझने का प्रयास किया गया है कि वह बहुविषयक शिक्षण को कितने सकारात्मक व नकारात्मक रूप से समझ रहे हैं।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निर्धारित शोध उद्देश्य निम्नवत् है—

1. उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों में बहु-विषयक शिक्षण सम्बन्धी अनुभवों का अध्ययन करना।
2. निजी एवं सरकारी शिक्षण संस्थानों में बहु-विषयक शिक्षण के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर का अध्ययन।
3. बहु-विषयक शिक्षण के प्रति मानविकी विषय एवं तकनीकी विषयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर का अध्ययन।

4. शिक्षण अवधि के अनुभवों पर आधारित बहु-विषयक शिक्षण के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर का अध्ययन।
5. पारंपारिक कोर्स एवं व्यवसायिक कोर्स के आधार पर बहुविषयक शिक्षण के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर का अध्ययन।

शोध परिकल्पना

1. बहु-विषयक शिक्षण के प्रति उच्च शिक्षण संस्थानों में 10 वर्ष से कम शिक्षण अवधि शिक्षकों के पूर्ण करने वाले दृष्टिकोण में अन्तर नहीं हैं।
2. बहु-विषयक शिक्षण के प्रति उच्च शिक्षण संस्थानों के सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षण के दृष्टिकोण में अन्तर नहीं हैं।
3. बहु-विषयक शिक्षण के प्रति उच्च शिक्षण संस्थानों मानविकी/कामर्स एवं तकनीकी विषयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. बहु-विषयक शिक्षण के प्रति उच्च शिक्षण संस्थानों में क्रियान्वित परंपरागत पाठ्यक्रम एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रम से संबंधित शिक्षकों के दृष्टिकोण में अन्तर नहीं हैं।

शोध का परिसीमन

शोध अनुसंधान के पैनेमन व शुद्धता, निष्कर्ष एवं सही अध्ययन के लिए शोधकार्य का परिसीमन करना अत्यंत आवश्यक है। शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य को सम्पन्न करने के लिए एवं स्वयं के समय, साधन, ऊर्जा व इच्छा शक्ति के साथ निम्न शोधकार्य को सम्पन्न करने की कुछ परिसीमायें रखी हुई है, जिसके अन्तर्गत प्रस्तुत शोध अध्ययन पूर्ण किया जाएगा।

- प्रस्तुत अध्ययन में केवल मेरठ जिले में महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों को लिया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल सरकारी एवं निजी महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों को लिया गया है।
- समय-सीमा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग के 1 या 2 शिक्षकों को लिया गया है।
- समय-सीमा को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों से ऑनलाइन डेटा भी एकत्र किया गया है।

शोध की विधि

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के लिए विभिन्न विधियों का अध्ययन किया है। यह कहना कठिन होगा कि उनमें से कौन-सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त है, प्रत्येक विधि में कुछ गुण एवं कमियाँ होती हैं इसलिए यह कहना कठिन है कि एक शोध विधि दूसरी शोध विधि से उत्कृष्ट या निकृष्ट हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति की दृष्टिगत रखते हुए शोध के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

करलिंगर ने सर्वेक्षण शोध विधि को इस प्रकार परिभाषित किया है— “सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयन किये गये प्रतिदर्श के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सकें।”

शोध की जनसंख्या

समष्टि की संकल्पना एक सांख्यिकीय संकल्पना है, जिसका अर्थ होता है बहुत-सी इकाइयों का एक वृहद् समूह जिससे कुछ इकाइयों को अध्ययन के लिए चुना जाता है। शोध के संदर्भ में समाष्टि इकाइयों की एक निश्चित संख्या होती है जिनके विषय में अध्ययनगत निष्कर्ष लागू होता है। इसको इस प्रकार भी स्पष्ट किया जा सकता है— वह समस्त समूह जिसमें से न्यादर्श का चयन किया जाता है। जनसंख्या कहलाता है।

शोध का न्यादर्श

समष्टि की समस्त इकाइयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाइयों को एक निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता है। उस चुनी गई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। न्यादर्श को हम निम्न प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं।

करलिंगर (1986) “किसी जीव संख्या था समष्टि से उस जीव संख्या या समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में किसी भी चयन संख्या का चयन प्रतिदर्शन कहलाता है।”

थेट्स (1989) “न्यादर्श शब्द इकाइयों से एक समूह या सम्पूर्ण सामग्री के एक अंश के लिए सुरक्षित होना चाहिए जिसको इस विश्वास के ऊपर चुना गया कि वह सम्पूर्ण का प्रतिनिधि होगा।”

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

- स्वतंत्र—उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षक
- आश्रित चर—पूर्व अनुभव एवं दृष्टिकोण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अनुसंधान समस्या में संबंधित परिकल्पना की रचनाओं के पश्चात् उसके परीक्षण के लिए आवश्यक तथा तर्कसंगत आंकड़ों के संकलन की आवश्यकता होती है। प्रदत्तों का संकलन अनुसंधान एक महत्वपूर्ण चरण है। अनुसंधान के लिए प्रदत्त मूलाधार है और अनुसंधान की सफलता या असफलता पूरी तरह प्रदत्तों पर निर्भर करती है। साथ ही आंकड़ों के संकलन में शोधकर्ताओं का दृष्टिकोण से पक्षपात से मुक्त होना चाहिए। इससे अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय निष्पक्ष तथा वैद्य आंकड़ों के संकलनों में सुविधा रहती है तथा इसके निरपेक्ष विश्लेषण तथा विवेचन में भी अत्यधिक सहायता मिलती है।

तालिका सं०-4.1 : विषय का अध्ययन और बाहरी वातावरण (चिंतन आधारित शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
विषय के अध्यापन को बाहरी वातावरण से जोड़ते हैं।	30 (33.33%)	48 (58.33%)	11 (12.22%)	01 (1.11%)

तालिका 4.1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अपने विषय के शिक्षण को बाहरी वातावरण से जोड़ने का हमेशा प्रयास करने वाले शिक्षकों की संख्या 33.33 प्रतिशत है। तथा ऐसा प्रयास अधिकतर करने वाले शिक्षकों की संख्या 53.33 प्रतिशत हैं। वही 12.22 प्रतिशत शिक्षकों ने स्वीकार किया कि वे अपने विषय के अध्यापन में बाहरी वातावरण से उदाहरण जोड़ने का प्रयास कभी-कभी ही करते हैं।

वही 1.11 प्रतिशत उत्तरदाताओं शिक्षकों में से एक ने ऐसा स्वीकार किया कि उनके द्वारा ऐसा प्रयास नहीं किया जा सकता है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में विभिन्न विषयों से जुड़े हुए अध्यापक अपने शिक्षण के दौरान कक्षा से बाहर की परिस्थितियों, घटनाओं और उदाहरणों का प्रयोग करते हुए शिक्षण का प्रयास करते हैं। उनके द्वारा किया जाने वाला यह प्रयास NPE 2020 की अपेक्षाओं के अनुरूप है, परन्तु कुछ ऐसे शिक्षक भी हैं जो इस विषय को अधिक गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। अतः उन्हें NPE 2020 की अपेक्षा के अनुरूप प्रशिक्षण व मार्गदर्शन दिये जाने की आवश्यकता है।

तालिका सं0-4.2 : विभिन्न विषयों में उदाहरण देने की स्वतन्त्रता (विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आपकी कक्षा में विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के उदाहरण देने की स्वतन्त्रता होती है	44 (48.88%)	34 (37.78%)	12 (13.22%)

तालिका 4.2 के अवलोकन से विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधि के प्रयोग का परिणाम ज्ञात होता है कि शिक्षक अपनी कक्षा में हमेशा विद्यार्थियों को स्वतन्त्रता देने का प्रयास करते हैं, जिनमें 49 प्रतिशत शिक्षक हैं तथा 38 प्रतिशत ऐसे शिक्षक हैं जो ज्यादातर ऐसी क्रियाविधि करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा 14 प्रतिशत शिक्षक कभी-कभी अपने विद्यार्थियों को दूसरे विषय के उदाहरण देने की स्वतन्त्रता देते हैं।

उपर्युक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि लगभग 85 प्रतिशत शिक्षकों का यह प्रयास रहता है कि वे अपनी कक्षा में स्वतन्त्रता आत को बनाये रखे तथा विद्यार्थियों के सृजनात्मक स्तर के वृद्धि के लिए उन्हें उनके विषय की सीमाओं से बाहर ले जाया जाये। शिक्षकों का ऐसा प्रयास बहुविषयक शिक्षण के वृद्धि में आशाजनिक परिणाम है। आशयतः शिक्षक अपनी कक्षा में ऐसा करते आये हैं तों आगे इस प्रतिशत को में शत प्रतिशत वृद्धि की जा सकती हैं।

तालिका सं0-4.3 : विभिन्न विषयों से पाठ को बोधगम्य बनाना (कक्षा चर्चा शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
पाठ को बोधगम्य बनाने के लिए आप विभिन्न विषयों से उदाहरण लेते हैं	38 (42.22%)	37 (41.11%)	14 (15.55%)	1 (1.1%)

--	--	--	--	--

तालिका 4.3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पाठ को बोधगम्य बनाने के लिए उद्देश्य से विभिन्न विषयों से उदाहरण लेने की शिक्षण विधि में हमेशा और ज्यादातर शिक्षकों की संख्या 43 प्रतिशत एवं 41 प्रतिशत लगभग समान है। एवं आगे यदि देखा जाए तो जो कभी-कभी अपने पाठ में अन्य विषयों से उदाहरण लेते हैं वह सिर्फ 16 प्रतिशत है तथा एक ऐसा कुछ शिक्षक (1.1 प्रतिशत) ऐसे भी है जो दूसरों विषयों के उदाहरणों से अपना विषय पढ़ाना सही नहीं समझते हैं।

उपर्युक्त विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि बहु-विषयक शिक्षण के क्रियान्वयन की पर्याप्त ट्रेनिंग शिक्षकों के पास उपलब्ध नहीं है, क्योंकि बहु-विषयक शिक्षण का आशय ही यह है कि समस्या समाधान के लिए विभिन्न विषयों से जानकारी प्राप्त की जाये। अतः यहाँ शिक्षकों के ट्रेनिंग के लिए कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है जिनसे उनके कौशलों में वृद्धि हो सके।

तालिका सं०-4.4 : बहु-विषयक उपागम को स्व-मूल्यांकन के लिए प्रयोग (प्रतिक्रिया समर्थक शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
विद्यार्थियों को स्व-मूल्यांकन करते समय बहु-विषयक दृष्टि अपनाने की सलाह देते हैं	44 (48.88%)	29 (32.22%)	17 (18.89%)

तालिका 4.4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्व-मूल्यांकन की प्रक्रिया में बहु-विषयक दृष्टि को हमेशा अपनाने वाले (44 प्रतिशत) शिक्षक हैं तथा इस प्रक्रिया में 32.22 प्रतिशत ज्यादातर शिक्षक शामिल है। जबकि स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित करने में कभी-कभी वाले शिक्षकों की संख्या 18.89 प्रतिशत है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि लगभग आधे शिक्षक बहु-विषयक शिक्षण को समझते हुए विद्यार्थियों को स्व-मूल्यांकन करने के लिए जरूरी समझते हैं। अन्य शोध की अपेक्षा इन परिणामों में कमी पाई गई है। (ओदेह, 2018) के शोध में विद्यार्थियों को बहु-विषयक शिक्षण को आत्मसात करने के लिए अपने मुख्य बिन्दुओं में से स्व-मूल्यांकन को भी एक प्रमुख आयाम प्रदर्शित किया था। अतः यहाँ इस परिणामों की कमी में आने वाले कारणों पर शोध की जा सकती है। जिससे 12 बहुविषयक शिक्षण को शत प्रतिशत शिक्षा प्रणाली में उभारा जा सके।

तालिका सं०-4.5 : विद्यार्थियों को व्यवसाय जगत की सूचनाओं की जानकारी (व्यवसायिक विकास शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आप विषय को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि विद्यार्थियों को व्यवसाय जगत के लिए पर्याप्त सूचना उपलब्ध हो जाए	28 (31.11%)	44 (48.88%)	18 (20.00%)

तालिका 4.5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 28 प्रतिशत शिक्षक ऐसे हैं जो मानते हैं कि विद्यार्थियों को हमेशा ही विषय का ज्ञान इस प्रकार कराया जाए कि उनको व्यवसाय जगत के लिए पर्याप्त सूचना उपलब्ध हो जाए। 48 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ज्यादातर इसी तरह के शिक्षण की आवश्यकता होती है कि उन्हें व्यवसाय/रोजगार संबंधी सूचनाओं की जानकारी मिल सके जबकि 18.20 प्रतिशत शिक्षक ऐसा मानते हैं कि इस तरह की सूचनाओं को विद्यार्थियों के लिए कभी-कभी उपलब्ध कराना चाहिए।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक पूर्व में भी ऐसा करते आये हैं जबकि एनईपी 2020 की समीक्षा की जाये तब इस बात की पर बल दिया जाता है कि भारतीय शिक्षा नीति 2020 भारत में रोजगार के लिए अवसरों का निर्माण करेगी। (मोदी जी, 2020) अतः बहु-विषयक शिक्षण के इस आयाम के द्वारा मनुष्य में ज्ञान व कौशल में वृद्धि कर योग्य नागरिक बनाया जा सकता है।

तालिका सं0-4.6 : विद्यार्थियों को अन्य विषयों के विद्यार्थियों से प्रेरणा (व्यवहार प्रबन्धक शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आप अपने विद्यार्थियों को अन्य विषयों के विद्यार्थियों से सीखने के लिए प्रेरित करते हैं	31 (34.45%)	29 (32.23%)	29 (32.23%)	1 1-1-1

तालिका 4.6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शिक्षण विधि में अन्य विषयों के विद्यार्थियों से हमेशा प्रेरणा लेने की सलाह देने वाले शिक्षकों की संख्या 35 प्रतिशत है तथा ज्यादातर शिक्षक भी लगभग 33 प्रतिशत इसी विधि को अपनाते हैं। इस विधि में कभी-कभी वाले शिक्षकों की संख्या भी लगभग इतनी है समस्त शिक्षकों में से 1.1 प्रतिशत ऐसे हैं जो इस मत के लिए कभी भी स्वीकृति नहीं देंगे।

अतः प्रश्न की प्रकृति को समझते हुए यह आंकलन किया जा सकता है कि अपने विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों के विद्यार्थियों से सलाह लेने में कोई प्रमुखता परिणाम नहीं देखे गए हैं जो यह स्पष्ट कर रही है कि नए ज्ञान को सीखने की तत्परता में आशंका जैसी संभावनाएँ बन रही हैं। जोकि बहु-विषयक शिक्षण की वृद्धि में बाधक तत्व कारकों का कार्य करेगी क्योंकि शिक्षण का सर्वोत्तम गुण होता ही है विद्यार्थी का सुग्राही होना। अतः इस क्षेत्र में विद्यार्थी एवं शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप पर कई शोध कार्य किये जा सकते हैं।

तालिका सं0-4.7 : ज्ञान को समाजोपयोगी बनाना/(पूछताछ निर्देशित शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आप अपने विषय का ज्ञान समाज की जरूरतों के साथ जोड़ते हुए देते हैं	47 (52.23%)	32 (35.56%)	11 (12.23%)	--

तालिका 4.7 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में अपने विषय को ज्ञान को समाज के साथ सम्बन्ध करके देने की हमेशा होती है जिसमें आंकड़े हमेशा वाली स्थिति को 53 प्रतिशत शिक्षकों के साथ सहमति देते हैं। वहीं 36 प्रतिशत शिक्षक ज्यादातर अपने विषय के ज्ञान को समाज की जरूरतों के साथ जोड़ते हैं एवं कभी-कभी में 13 प्रतिशत शिक्षकों की संख्या है।

उपर्युक्त विश्लेषण को मासलों की आवश्यक सिद्धान्त से समझा जा सकता है जिसमें जरूरतों को शंकु पर दिखाया गया है यदि इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण विधि का चुनाव किया जाये तो एक आवश्यक शिक्षा की पूर्ति हो सकती है जो बहु-विषयक उपागम को दर्शाती है। जिस तरह की वर्तमान की स्थिति है कि विद्यार्थियों में मानसिक स्तर की दिक्कते अधिक सामने आ रही है जिसके पीछे शिक्षा का सामाजिक क्षेत्र से जुड़ाव में कमी है। अतः मासलों के इन बिन्दुओं को आधार पर बहु-विषयक शिक्षण में उन्नति के लिए शोध कार्य किया जा सकता है जो यह बताये सामाजिक शिक्षा विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में किस प्रकार प्रयोग किया जाये जिससे विद्यार्थी अपने प्रति व समाज के प्रति अधिक जिम्मेदार बन सकें।

तालिका सं०-4.8 : विषयों में समग्रता लाने के लिए शिक्षण विधि उपयोगी (सहभागिता शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आपकी शिक्षण विधि विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की समग्रता में सीखने के लिए प्रेरित करते हैं	28 (31.23%)	53 (58.56%)	9 (10%)	--

तालिका 4.8 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकतर शिक्षक 53 प्रतिशत मानते हैं कि विद्यार्थियों को विभिन्न विषयोंकी समग्रता में सीखने के लिए प्रेरित किया जाये। 28 प्रतिशत शिक्षक समग्रता में सीखने के लिए हमेशा ही प्रेरित करते हैं तथा 9 प्रतिशत शिक्षक इस मत के साथ कभी-कभी जाते हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से पाया गया है कि शिक्षा की समग्रता को 53 प्रतिशत शिक्षक समझ रहे हैं कि वर्तमान युग की आवश्यकता का ज्ञान है कि शिक्षा में समग्रता का सम्प्रत्यय को शामिल किया जाये जोकि प्रत्येक पद पर अनिवार्य है तथा जिसके माध्यम से परिणामों की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है।

तालिका सं०-4.9 : प्रकरण को बहुआयामी रूप से प्रस्तुत करना (क्षमता आधारित शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आप अपने शिक्षण में प्रकरण को प्रस्तुत करते समय उसके बहु-आयामी उपयोग की चर्चा करते हैं	37 (41.23%)	44 (48.56%)	9 (10%)	--

तालिका 4.9 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अपने शिक्षण में प्रकरण को प्रस्तुत करते समय 42 प्रतिशत शिक्षक हमेशा ही बहु-आयामी उपयोगी की चर्चा करते हैं। 49 प्रतिशत शिक्षक ज्यादातर बहु-आयामी उपयोग की चर्चा करने में रुचि रखते हैं जबकि 9 प्रतिशत ऐसे शिक्षक भी हैं जो कभी-कभी ही अपने शिक्षण के दौरान बहु-आयामी सन्दर्भ को अपने कक्षा में व्याख्यान के दौरान प्रयोग में आते हैं। उपर्युक्त तथ्यों के प्रतिशत के आधार पर देखा जा सकता है कि शिक्षकों का बहु-आयामी दृष्टिकोण पर आशाजनित ब्रेटेज है। नई शिक्षा नीति 2020 के लागू होने पर आरम्भ होने वाले नवीन कोर्सेस का अध्ययन कराने के लिए शिक्षक के पूर्व अनुभव सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित करते हैं।

तालिका सं0-4.10 : विशेष समस्या समाधान में अन्य विषयों की जानकारी उपलब्ध कराना (समस्या समाधान शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
विषय में आने वाले समस्या समाधान के लिए आप विद्यार्थियों को अन्य विषयों की जानकारी का उपयोग के लिए प्रेरित करते हैं	29 (32.23%)	36 (28.56%)	19 (21.10%)	6 (6.7%)

तालिका 4.10 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अपने विषय में आने वाली समस्या समाधान के लिए 29 प्रतिशत शिक्षक हमेशा ही अन्य विषयों की जानकारी का उपयोग करते हैं। जबकि विषय से सम्बन्धित समस्या समाधान के लिए 36 प्रतिशत शिक्षक ज्यादातर अन्य विषयों की जानकारी का उपयोग के लिए प्रेरित करते हैं। 19 प्रतिशत शिक्षक ऐसे भी हैं जो कभी-कभी ही प्रेरित करते हैं कि विद्यार्थी अन्य विषयों की जानकारी का उपयोग करें। कुछ 7 प्रतिशत शिक्षकों से ऐसा डेटा भी एकत्र किया गया जिसमें उन्होंने असहमति जताई कि वे कभी भी दूसरे विषयों से जानकारी लेने के लिए अपने विद्यार्थियों को प्रेरित नहीं करते हैं। अतः प्राप्त परिणामों के निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों को एकल अनुशासन में सहजता का अनुभव होता है।

तालिका सं0-4.11 : अन्य विषयों के विषय वस्तु का उपयोग करना (खोज शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
प्रकरण की स्पष्टता बढ़ाने के लिए आप अन्य विषयों के	26 (28.89%)	32 (35.56%)	28 (31.11%)	4

विषय-वस्तु का उपयोग करते हैं				(4.7%)
------------------------------	--	--	--	--------

तालिका 4.11 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों द्वारा पढाये गये प्रकरण की स्पष्टता बढ़ाने में 29 प्रतिशत शिक्षक हमेशा ही विषय-वस्तु का उपयोग करते हैं एवं 32 प्रतिशत ऐसे शिक्षक हैं जो ज्यादातर प्रकरण की स्पष्टता बढ़ाने के लिए अन्य विषयों के विषय-वस्तु का उपयोग करते हैं तथा कभी-कभी स्थिति में 32 प्रतिशत शिक्षक प्रकरण के ज्ञान मकें नवीनता लाने के लिए अन्य विषयों की विषय-वस्तु का उपयोग करते हैं तथा शोध में कुछ ऐसे शिक्षक भी हैं जिन्होंने अपने मत में अन्य विषय वस्तु के उपयोग की अवहेलना की ऐसे शिक्षकों का प्रतिशत 5 प्रतिशत है।

क्लासेन, (2018) ने अपने अध्ययन में दूसरे विषयों की जानकारी प्राप्त करने से अपने विषय के ज्ञान में उच्चतर स्तर तक पहुंचाने में आवश्यक विधि बताई। उन्होंने अपने शोध में बहु-विषयक शिक्षण विधि को विषय को अन्य तरीके से चिंतन का मार्ग बताया है।

तालिका सं0-4.12 : विषयों के माध्यम से सामाजिक वातावरण के अनुकूल बनाना (प्रतिभागी शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आप विद्यार्थियों को अपने विषय के माध्यम से सामाजिक वातावरण के अनुकूलन हेतु तैयार करते हैं।	43 (28.89%)	36 (35.56%)	10 (10.11%)	1 (1.1%)

तालिका 4.12 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी को अपने विषय के माध्यम से हमेशा ही 48 प्रतिशत शिक्षक सामाजिक वातावरण के अनुकूलन हेतु तैयार करते हैं। 40 प्रतिशत शिक्षक ऐसी स्थिति अधिकतर प्रतिक्रिया देते हैं तथा 11 प्रतिशत ऐसे शिक्षक हैं एवं कुछ शिक्षक लगभग 2 प्रतिशत से शोधकर्ता को इस प्रकार डेटा एकत्र किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों को अपने विषय के माध्यम से परिस्थिति अनुकूलन के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करना आवश्यक नहीं समझते।

तालिका सं0-4.13 : विषय अध्यापन के लिए विभिन्न सामग्री का प्रयोग (प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
आप कक्षा में विषय का ज्ञान प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री का प्रयोग करते हैं	36 (40%)	45 (50%)	8 (8.9%)

तालिका 4.13 से परिणामों में यह स्पष्टता है कि 40 प्रतिशत शिक्षक विभिन्न सामग्री को प्रयोग करके शिक्षण करते हैं तथा कक्षा में ज्यादा प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण विधि को प्रयोग करने वाले शिक्षक 50 प्रतिशत हैं तथा कभी-कभी स्थिति में जिन्हें लगता है कि केवल कुछ ही ऐसे प्रकरण होते हैं, जिनमें शिक्षक अपनी कक्षा में इस विधि का प्रयोग कर सकते हैं तो इस सीमा में आने वाले कुल शिक्षक लगभग 9 प्रतिशत हैं।

उपर्युक्त परिणामों के आधार पर यह व्याख्या की जा सकती है कि इस विधि का प्रयोग में लाने वाले शिक्षकों की संख्या कम है। इस बात को अन्य शोध द्वारा भी पुष्टि की जा सकती है। (थॉमस, 2000) किए गए शोध में पाया गया कि इस विधि का समुचित प्रयोग करने के लिए इन कारकों के योगदान की आवश्यकता है।

- संस्थान का योगदान।
- चिंतन स्तर में वृद्धि।
- विषय सीमा से बाहर निकलना।
- शिक्षकों को कौशल ज्ञान की जानकारी।
- विद्यार्थियों का रुचि स्तर।

अतः शोधकर्ता के परिणाम मिले-जुले प्रतीत होते हैं।

तालिका सं0-4.14 : विषयों के अध्यापन में अन्य विषयों के दृष्टिकोण को महत्व (परस्पर क्रिया शिक्षण विधि)

	हमेशा	ज्यादातर	कभी-कभी	कभी नहीं
अपने विषय का अध्ययन कराने के लिए आप अन्य विषयों के दृष्टिकोण को भी महत्व देते हैं	28 (31%)	45 (34%)	31 (34.45%)	01 (1.1%)

तालिका 4.14 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विषयों के अध्यापन में अन्य विषयों के दृष्टिकोण को हमेशा ही महत्व देने वाले शिक्षकों की संख्या 33 प्रतिशत है। 34 प्रतिशत शिक्षक अधिकतर ऐसी शिक्षण विधि को कक्षा में प्रयोग में लाते हैं। जबकि 35 प्रतिशत शिक्षक ऐसे भी हैं, जो मानते हैं परस्पर प्रक्रिया शिक्षा विधि को कक्षा में कभी-कभी ही प्रयोग में लाया जाता है एवं 1 प्रतिशत शिक्षक ऐसे भी सोचते हैं जो इस सोच की तरफ इंगित करते हैं कि कक्षा में इस शिक्षण विधि को कभी नहीं प्रयोग में लाया जाता है।

उपर्युक्त परिणामों के आधार पर परस्पर क्रिया शिक्षण विधि को मूल्यांकन करके निम्न बातों पर पहुंचा जा सकता है कि शिक्षक अन्य विषयों के दृष्टिकोण को अपनाने के लिए अपने ज्ञान के दायरे को सीमित क्षेत्र के अन्तर्गत रखना ही पसंद करते हैं। अतः एनईपी 2020 के अनुसार शिक्षक की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए बी0एड0 कार्यक्रम को 2 वर्ष से बढ़ाकर 4 वर्ष का करने का प्रस्ताव है इस प्रोग्राम की अवधि को बढ़ाने का यही उद्देश्य है कि शिक्षकों के सभी आयामों में वृद्धि की जा सके।

तालिका 4.15 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 46.51 प्रतिशत शिक्षकों का मत है कि उनके विद्यार्थियों को किसी अन्य विषय का आलोचनात्मक विश्लेषण करना पसंद आता है। जबकि 36 प्रतिशत ऐसे भी शिक्षक हैं जो मानते हैं कि उनके विद्यार्थी आलोचनात्मक चिंतन

पंसद करते हैं, इनमें से 11 प्रतिशत शिक्षकों का मत यह भी कि वे अपने विषय के ज्ञानात्मक स्तर में वृद्धि हो उसी के लिए अध्ययन करना पसंद करते हैं एवं उनमें से 1 प्रतिशत शिक्षकों का ऐसा मत भी पाया गया कि उनकी कक्षा में विद्यार्थी केवल अपने विषय तक ही सीमित रहना पसंद करते हैं।

अतः निष्कर्षतः शिक्षण विधि की महत्वता को समझते हुए शिक्षकों का संतोषजनक परिणाम है कि लगभग 84 प्रतिशत शिक्षकों की कक्षा में आलोचनात्मक चिंतन के प्रति विद्यार्थी तैयार रहते हैं और अन्य विषयों को अपने विषय के ज्ञान से संबंधित करके अध्ययन करने में रुचि के प्रदर्शित करते हैं।

उपर्युक्त सभी 15 तालिकाओं को सम्पूर्ण रूप से अवलोकन किया जाये तब प्रयोग हमेशा प्रयोग करने वाली शिक्षण विधि को इन प्रतिशत क्षेत्र में दिखाया गया है।

चित्र 4.1 हमेशा प्रयोग किये जाने वाली बहु-विषयक शिक्षण अधिगम के लिए प्राप्तांक सीमा 51.16-55 प्रतिशत

- पूछताछ निर्देशित शिक्षण विधि
- आलोचनात्मक विश्लेषण शिक्षण विधि

46-50 प्रतिशत

- प्रतिक्रिया समर्थक, विधि
- विद्यार्थी केन्द्रित विधि
- प्रतिभागी शिक्षण विधि

41-45 प्रतिशत

- कक्षा चर्चा शिक्षण विधि
- क्षमता आधारित शिक्षण विधि

36-40 प्रतिशत

- चिंतन आधारित
- व्यवहार प्रबंधक विधि

31-35 प्रतिशत

- चिंतन आधारित शिक्षण विधि
- व्यवसायिक विधि शिक्षण विधि
- सहभागिता शिक्षण विधि
- परम्परा क्रिया विश्लेषण
- समस्या समाधान विधि

पिरामिड की संरचना शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों के पूर्व अनुभव से संबंधित हैं। इसमें प्रतिशत संख्या से यह मापा गया है कि शिक्षक विशेष विधि को कक्षा में प्रयोग करता है।

परिणामतः बहु-विषयक शिक्षण अधिगम अधिकतम 55 प्रतिशत तक ही प्रयोग में लाया जा रहा है।

चित्र 4.2 ज्यादातर प्रयोग किये जाने वाली

- चिंतन आधारित

- बहु-विषयक शिक्षण
अधिगम के लिए प्राप्तांक
सीमा 51-55 प्रतिशत
46-50 प्रतिशत
- सहभागिता
 - प्रोजेक्ट विधि
 - क्षमता आधारित
 - व्यवसायिक विकास
 - प्रोजेक्ट आधारित
- 41-45 प्रतिशत
- कक्षा चर्चा विधि
 - विद्यार्थी केन्द्रित
 - खोज शिक्षण विधि
 - प्रतिभागी शिक्षण
- 30-35 प्रतिशत
- विद्यार्थी केन्द्रित
 - खोज शिक्षण विधि
 - प्रतिभागी शिक्षण
- 30-35 प्रतिशत
- प्रतिक्रिया समर्थक
 - व्यवहार प्रबंधक
 - पूछताछ निर्देशित
 - परस्पर क्रिया विश्लेषण
 - आलोचनात्मक विश्लेषण
 - समस्या समाधान

अतः पूर्व के परिणामों की तुलना (हमेशा से) में ज्यादातर वाली स्थिति में कुछ शिक्षण विधियाँ अपने समान स्थानों पर रही है, जबकि कुछ शिक्षण विधि को अधिक से कम अंक प्राप्त हो गये है व कुछ विधि को कम से अधिक प्राप्तांक प्राप्त हुए है।

संदर्भ सूची :

- सेट, एस. (2007) विषय पाठ : औपनिवेशिक भारत की पश्चिमी शिक्षा डरहम : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस <http://www.mynep.in>
- कुमार, सी.आर. इत्यादि (2017) : "द फ्यूचर ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज : कम्प्रेटिव एंड इंटरनेशनल पर्सपेक्टिव" में उच्च शिक्षा में अतः विषय का फीनिक्स नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- सेट, एच. (1920), शैक्षिक रिकार्ड से चयन, पीटी 1731-1839, कलकत्ता
- श्रीवास्तव, एस. (2021), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सफलता के लिए शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। दृष्टि : द विजन
- नियाजी, एस. (2021), 35 बहुविषयक अनुसंधान विश्वविद्यालयों की योजना।
- आनंद, अ. (2020) एनईपी 2020 : यह स्कूलों और विश्वविद्यालयों के बारे में क्या कहता है, न्यू दिल्ली, <http://www.mynep.in>
- इमरान, अ. (2020), ए वेलकम चेंज : द हिन्दू, ीजजचरुधूण्जीमीपदकनण्बवउ
- लाह, आर. (2016), इन मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन, द न्यू फ्यूचर, हिन्दुस्तान टाइम, नई दिल्ली

- इंडिया टूडे (2020), हाऊ टीचर्स केन शेप स्टूडेंट्स फॉर ए न्यू इंडिया, इंडिया टुडे इन, नई दिल्ली
- खत्ता, आर. (2020), एनईपी 2020 : शिक्षकों का सशक्तीकरण हिन्दुस्तान ग्रेटर नोएडा, <http://www.hindi.newsclick.in>
- चारी, आर. (2020), एनईपी 2020 : शिक्षकों का सशक्तीकरण हिन्दुस्तान ग्रेटर नोएडा, <http://www.live.hindustan.com>
- मुरुगेसन, वी. (2021) भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर शिक्षकों की शप/संळ प्रोळ श्री रामकृष्ण मिशन विश्वविद्यालय, कोयंबटूर